सोच अच्छी होनी चाहिए क्योंकि नजर का इलाज मुमकिन है नजरिये का नहीं।
– अज्ञात

पेज थ्री
www.page3news.in

देश की संवेदना को झकझोर दिया

एक दिन पहले ही उसे गंभीर स्थिति में अलीगढ़ के जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज से यहां लाया गया था। इस मौत ने जहां एक बार फिर पूरे देश की संवेदना को झकझोर दिया है, वहीं गैंगरेप जैसे अपराध से निपटने में प्रशासनिक और पुलिस तंत्र की घोर विफलता को भी उजागर किया है।

सिदार्थ साहनी।।

गैंगरेप और भीषण यातनाओं का शिकार हुई यूपी के हाथरस जिले की 19 साल की दलित लड़की ने 15 दिनों तक मौत से जूझने के बाद मंगलवार को दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में दम तोड़ दिया। एक दिन पहले ही उसे गंभीर स्थिति में अलीगढ़ के जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज से यहां लाया गया था। इस मौत ने जहां एक बार फिर पूरे देश की संवेदना को झकझोर दिया है, वहीं गैंगरेप जैसे अपराध से निपटने में प्रशासनिक और पुलिस तंत्र की घोर विफलता को भी उजागर किया है। इस घटना के बाद स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शोक व्यक्त करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार को निर्देश दिया कि इसके सभी दोषियों के लिए कठोरतम सजा सुनिश्चित की जाए। मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी ने मामले की जांच के लिए एसआईटी भी गठित कर दी है। जांच–पड़ताल और सजा की जरूरत से तो कोई भी होशमंद इंसान इनकार नहीं करेगा, लेकिन हाथरस केस की खासियत यह है कि कुछ लोग बाकायदा एक मंच का बैनर लेकर आरोपियों को बचाने की कोशिश करते नजर आए।

इस पर चर्चा बाद में, लेकिन इससे पहले यह सवाल कि जांच और सजा के लिए बनाए गए लंबे–चौड़े तंत्र का संभावित अपराधियों में कोई खौफ क्यों नहीं दिख रहा है? दिल्ली के निर्भया मामले के बाद उमड़े जनाक्रोश के दबाव में जो बदलाव कानूनों में किए गए उनका भी समाज पर कोई खास असर नहीं देखने को मिल रहा। कुछ असर हुआ है तो सिर्फ इतना कि बलात्कार के जघन्य मामलों में अपराधियों को तुरत–फुरत मृत्युदंड देने की मांग हर संभव मंच से उठने लगी है। इसका नतीजा हैदराबाद पुलिस मुठभेड़ के रूप में देखने को मिला, जहां बलात्कार के संदिग्ध अपराधियों को उससे भी ज्यादा संदिग्ध ढंग से मौत के घाट उतार दिया गया। समाज, पुलिस और कानून का कुछ खौफ संभावित अपराधियों में हो, इसके लिए सुनसान जगहों पर पुलिस की धमक, घटना घटित होने के बाद चुस्त कार्रवाई और पक्की जांच के जरिये तय प्रकिया के तहत अपराधियों को अदालत से जल्दी सजा होनी चाहिए, जिसके लिए न समाज में कोई आग्रह न दिखता है, न सरकारी तंत्र में। इसके उलट अपराधियों की जाति और धर्म के आधार पर उनके बचाव में खड़े होने की प्रवृत्ति जरूर दिखने लगी है जो कठुआ रेप कांड के बाद अब हाथरस कांड में भी सामने आई है। ऐसी सोच के रहते क्या भारत कभी सभ्य समाज बन पाएगा? बहरहाल, एसआईटी जांच के नतीजों का सबको इंतजार रहेगा, मगर अभी ऐसी कई बातें प्रकट हैं जो पुलिस–प्रशासन को संदेह के घेरे में खड़ा करती हैं।

मामले की पहली शिकायत से लेकर रात के अंधेरे में बिना पारिवारिक भागीदारी के पीड़िता का अंतिम संस्कार कर देने तक उसकी भूमिका पर सवाल ही सवाल हैं। ऐसी दीदादिलेरी स्थानीय तंत्र अकेले दम पर नहीं दिखा सकती। लिहाजा संदेह के छींटे अन्य दिशाओं में भी जा रहे हैं। उम्मीद करें कि पीएम के निर्देश और सीएम की तत्परता से इन सवालों के अधिक भरोसेमंद जवाब सामने आएंगे।

उद्देश्य

अशोक वोहरा। जैसा की हमने पहले भी कहा है की सफल इंसान "सिर्फ इसलिये" "ऐसेही " Timepass के लिए" कोई भी काम नही करते। सफल इंसान अपना हर एक काम किसी न किसी उद्देश के साथ ही करता है। कोई भी काम आप क्यों कर रहे हो? इस बात को जानना, आपमें आपके लक्ष्य को पाने की अपार उर्जा निर्माण करता है। उद्देश्य होने के कारण आप अपना काम ठीक से चसंद कर सकते है और आपका जपउम बेकार चीजे करने में बर्बाद नहीं होगा। दुसरे के सलाह को स्वीकार करना कोई आसान काम नही है, लेकिन यदि आप ये निर्णय ले लेते होते की आप उनके सलाह को सुनोंगे और अपने कार्य में सुधार की कोशिश करोंगे, तो आपका प्रदर्शन और भी ज्यादा अच्छा होने लगेंगा।

धर्म-दर्शन

संपादकीय

समाज और राजनीति

लोकतंत्र में राजनीति से अपेक्षा की जाती है कि वह समाज की विसंगतियों को दूर करने में सार्थक भूमिका निभाएगी। पर भारतीय राजनेताओं ने इस मोर्चे पर भी निराश किया है। दलितोत्थान के बारे में सोचने की फुरसत तो उन्हें तब होगी जब अपने उत्थान की योजनाओं से फुरसत मिलेगी। ऐसे में आज नहीं तो कल लोग यह सचाई समझ जाएंगे कि हमारी समस्याएं सुलझाने कहीं से कोई और नहीं आने वाला। अपने समाज की सोच में पैठी गड़बड़ियों को हमें ही दूर करना होगा। इसका कोई बना बनाया हल भले न मौजूद हो, पर इतना जरूर समझा जा सकता है कि समस्या खुद को श्रेष्ठ और दूसरे को हीन समझने की भावना से जुड़ी है इसलिए समाधान के सूत्र सबको समान समझने की भावना में ही मिल सकते हैं। और बात दलित महिलाओं से बलात्कार की करें तो निश्चित रूप से मामला उन सामान्य प्रवृत्तियों तक सीमित नहीं रह जाता जिनकी ऊपर चर्चा की गई है। इसमें जातिगत पूर्वाग्रह का एक पहलू और जुड़ जाता है। इनके पीछे अक्सर दलितों को मजा चखाने, उनकी अक्ल ठिकाने लाने का भाव काम कर रहा होता है। पहले उम्मीद की जाती थी कि जैसे–जैसे शिक्षा का प्रचारदृप्रसार होगा और जात–पांत की भावना कमजोर पड़ेगी, यह समस्या हल होती जाएगी। लेकिन आज के शिक्षित समाज में जातिगत भेदभाव की भावनाएं कम होने के बजाय बढ़ती ही नजर आ रही हैं। हाथरस मामले में भी आरोपियों के बचाव में एक सवर्ण संगठन के आगे आने की खबर है।

इस घटना पर स्वाभाविक रूप से देशवासियों की भावनाएं उबल पड़ी हैं। लेकिन सवाल सिर्फ इस एक घटना का नहीं है। उसे केवल कुछ तत्वों का मानसिक दिवालियापन कहकर खारिज नहीं किया जा सकता।

झूठा श्रेष्ठताबोध

रोहित कौशिक।।

उत्तर प्रदेश के हाथरस में 14 सितंबर की सुबह दलित युवती से तब गैंगरेप किया गया, जब वह घास काटने गई थी। उस हमले के दौरान युवती की जीभ कट गई और रीढ़ की हड्डी टूट गई। 15 दिन अस्पताल में जिंदगी की लड़ाई लड़ने के बाद उसने दम तोड़ा। इस घटना पर स्वाभाविक रूप से देशवासियों की भावनाएं उबल पड़ी हैं। लेकिन सवाल सिर्फ इस एक घटना का नहीं है। ऐसी घटनाएं जिस तरह बढ़ती जा रही हैं, उसे केवल कुछ तत्वों का मानसिक दिवालियापन कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। हमें बलात्कार और सामूहिक बलात्कार की मानसिकता को समझना होगा।

दिसंबर 2012 में दिल्ली में हुई गैंगरेप की घटना के विरोध में जिस तरह से जनता सड़कों पर उतरी थी ,उसे देखकर लगा था कि शायद हमारा समाज जाग गया है। लेकिन इस घटना के बाद भी लगातार ऐसे समाचार प्रकाश में आते रहे। हाथरस की घटना निर्भया कांड से एक कदम आगे की है। इसमें बलात्कारी सड़क चलते अजनबी नहीं, लड़की के गांव के थे। दलितों के प्रति समाज के एक हिस्से में पैठे पूर्वाग्रह की भी इस घटना में एक भूमिका दिखती है। दलितों का विकास आज भी समाज के

कथित उच्च वर्गों की आंख में चुभता है। दलितों के साथ अत्याचार की घटनाओं के मूल में ऊंची जातियों द्वारा अपने आपको श्रेष्ठ मानने और दलितों को कमतर सिद्ध करने का भाव ज्यादा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे देश में दलित चेतना बढ़ने के साथ ही दलितों पर अत्याचार के मामले भी बढ़े हैं।

गैर–दलितों में दबंगई का भाव कायम है। उनका श्रेष्ठताबोध आक्रामक रूप ले रहा है और बार–बार हमारे समाज के खोखले आदर्शवाद की पोल खोल रहा है। दिखावे का आलम यह है कि मुख्यध ाारा के राजनेता खुद को दलित हितैषी दिखाने के लिए आंबेडकर की मूर्ति पर फूल चढ़ाने का नाटक करते हैं, लेकिन उनका जनाधार दलितों को नीचा दिखाने का कोई मौका नहीं चूकता। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने इस सत्य को बहुत पहले समझ लिया था कि जब तक दलित वर्ग अपनी शक्ति को पहचान कर सत्ता का भागीदार नहीं बनेगा, उसकी उपेक्षा होती रहेगी। लेकिन सवाल यह है कि क्या इस दौर में सत्ता का भागीदार बने दलित नेताओं को आंबेडकर के विचारों और आदर्शों की कोई फिक्र है?

आज हर राजनीतिक दल अपने स्वार्थ के लिए आंबेडकर के नाम का इस्तेमाल कर रहा है। यही कारण है कि जब आम दलित शोषण का शिकार होता है तो दलितों की नुमाइंदगी का दावा करने वाले तमाम दल एकाध बयान जारी करने की औपचारिकता दिखाकर पल्ला झाड़ लेते हैं। बहरहाल, बात बलात्कार की करें तो यह एक ऐसा आपराधिक कृत्य है जो पीड़ित को न केवल शारीरिक यंत्रणा देता है बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी घायल कर देता है। इसके पीछे एक प्रवृत्ति स्वयं को श्रेष्ठ और दूसरे को हीन सिद्ध करने की भी होती है, हालांकि वासना का तात्कालिक आवेग ही ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार होता है। मनोवैज्ञानिक बलात्कार करने वालों को मानसिक रूप से बीमार बताते हैं लेकिन बलात्कारी या दुष्कर्मी को मानसिक रूप से बीमार कह देने से उसके आपराधिक इरादे वाला पहलू कमजोर पड़ता है और उसका शिकार बनी स्त्री की पीड़ा दोयम दर्जे पर चली जाती है। गैंग रेप इससे निश्चित रूप से एक कदम आगे की चीज है क्योंकि इसमें आपराधिक इरादे के साथ एक सामूहिक योजना भी जुड़ी होती है।

सूडोकु नवताल- 5493

★★★★★ कठिनतम

	9				4			7
					7	9		
8								
4		5	8					
3				1				2
					9	7		6
								4
		3	5					
2			6				8	

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5492 का हल

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5

अपना ब्लॉग — ऐसी घटनाएं पहले नहीं होती?

मोहन। ऐसा नहीं है कि ऐसी घटनाएं पहले नहीं होती थीं लेकिन अभी तो इनकी बाढ़ आ गई है। इसकी वजह तलाशते हुए हमें इस दौर को बारीकी से देखना होगा कि इसके कौन–कौन से पहलू हमें जंगली जानवर से भी बदतर स्थिति में पहुंचा रहे हैं। मनुष्य की प्रवृत्तिगत विशिष्टताओं या स्वभाव की कमजोरियों या फिर मानसिक बीमारियों में इसकी वजह ढूंढना पर्याप्त नहीं है। लोगों का ध्यान इसके गहरे पहलुओं पर नहीं जाता इसलिए कभी इसे कानून–व्यवस्था की कमजोरी मानकर इसका निदान सख्त सजा में ढूढ़ते हुए आरोपियों को उसी ठौर मार देने की मांग करते हैं, कभी पुलिस मुठभेड़ में इनके मारे जाने पर पुलिस वालों पर फूल बरसाने लगते हैं तो कभी स्त्रियों की सुरक्षा के नाम पर उनके कपड़े–लत्ते या घूमने–टहलने में नुक्स निकालने लग जाते हैं। मगर सब कुछ करके भी नतीजा वही कि दुष्कर्म की एक घटना को हम भूल नहीं पाते तबतक दूसरी घटना प्रकाश में आ जाती है।